मूल्यः ₹ 25/-

ISSN-2231-1602

आपका तिस्ता-हिमालय

हिन्दी मासिक

वर्ष : 11, अंक : 111/112, फरवरी-2020

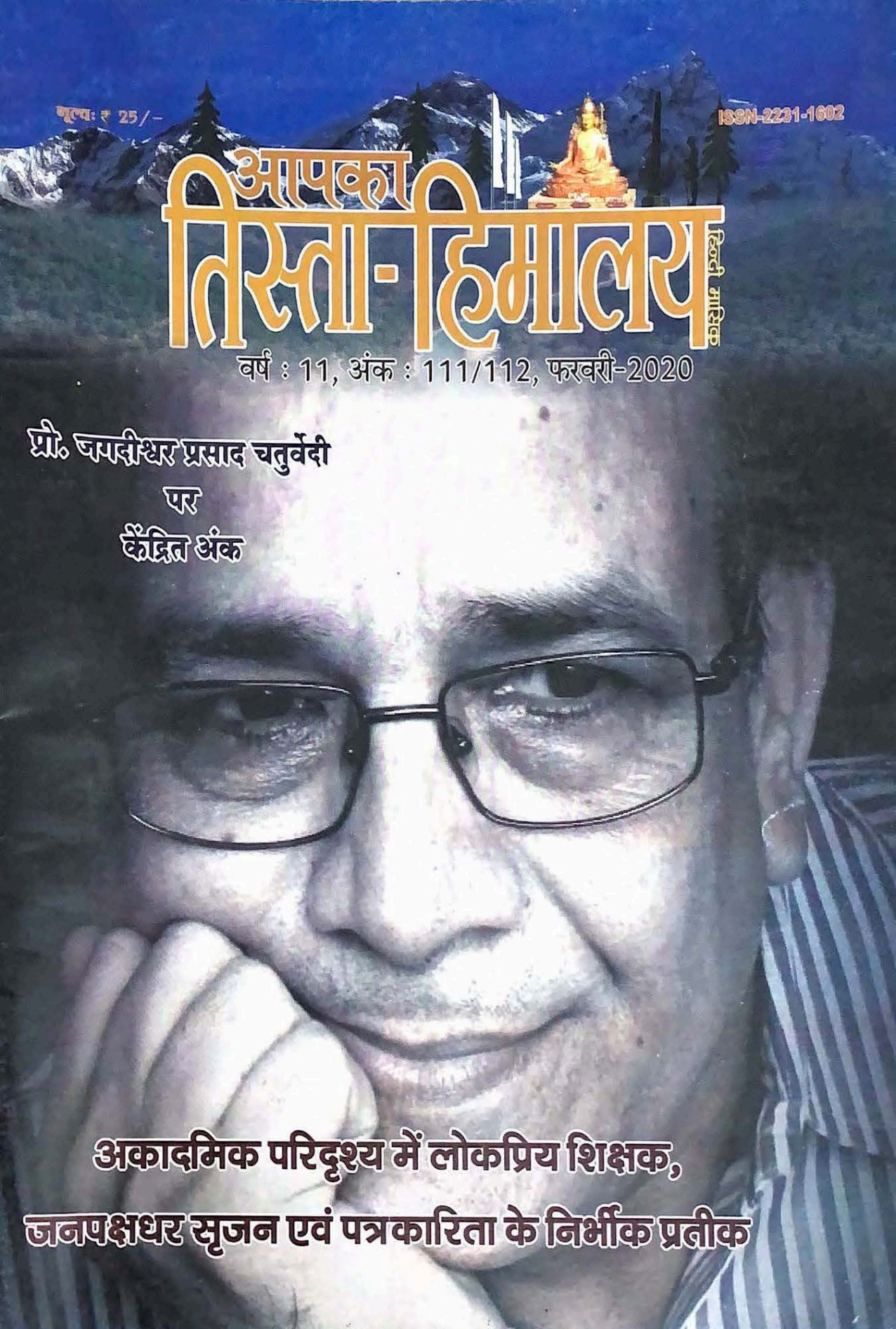

प्रो. जगदीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पर केंद्रित अंक

अकादमिक परिदृश्य में लोकप्रिय शिक्षक, जनपक्षधर सृजन एवं पत्रकारिता के निर्भीक प्रतीक

संपादकीय : प्रोफेसर जगदीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी प्रगतिशील धारा के एक सशक्त हस्ताक्षर....................05

जगदीश्वर चतुर्वेदीः व्यक्तित्व एवं विचारधारा....................08

जीवनानुभव और समाज- बचपन माँ और पिता....................12

मासकल्चर, ज्योतिष और राजनीति?....................16

भारतीय समाज, फासिज्म और भाषा....................23

अस्मिता, नागरिकता और स्त्रीवाद....................31

सोशलमीडियाः अराजक पूंजीवाद का महाकाव्य....................35

गोलवरकर का 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' भारतीयता का विरोधी है....................38

आक्रोश का समय 42

सिर्फ़ एक कहानी 45

आदमी बनने की कोशिश....................44

देश कागज़ पर बना नक्शा नहीं होता/ गोयबल्स 52

तुर्कमेनिस्तान की राजधानी असगाबाद में 2010 में सोवियतसंघ के विघटन के कारणों पर ओयोजित एक अन्तरराष्ट्रीय सेमीनार के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए प्रो. जगदीश्वर प्र. चतुर्वेदी

गुरुवर नामवर सिंह के साथ प्रो. जगदीश्वर प्र. चतुर्वेदी

फरवरी-2020
मासिक
मूल्यः 25/-(पच्चीस रुपये)

स्वामी/प्रकाशक एवं मुद्रक रंजू सिंह द्वारा मुक्तधारा प्रेस एंड पब्लिकेशन्स के लिए मुक्तधारा प्रेस, अपर रोड, गुरुंगनगर,
पो. प्रधाननगर, सिलीगुड़ी-3, जिला दार्जिलिंग (प.बं.)
से मुद्रित एवं 'अमरावती' अपर रोड गुरुंगनगर, पो. प्रधाननगर,
जिला- दार्जिलिंग (प.बं.) से प्रकाशित, संपादकः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह
मोः 094340-48163
email : mag.himalayprahari@gmail.com
muktadhara2006@rediffmail.com
Website : www.teestahimalaya.org
RNI No. WBHIN/2010/34186

विज्ञापन विभागः
ओझा मेंशन, प्रथम तल, हिलकार्ट रोड, सिलीगुड़ी-1, जिलाः दार्जिलिंग, प.बं.,
ब्यूरो चीफ : डॉ. डी.आर. नमीपुरिया, 5/6 आईएनएस भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-1

प्रबंधनः प्रदीप केडिया, सिलीगुड़ी

कानूनी सलाहकारः ओम प्रकाश शर्मा, सिलीगुड़ी / सुदीप कुमार, कोलकाता /
राज राजेश्वर सिन्हा, 57-स्कूल रोड, पूर्व पुटीआरी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता-700093

लेखा-निरीक्षकः राज कुमार बिहानी

संपादकीय प्रभारीः शैलेन्द्र चौहान, 34/242, सेक्टर-3, प्रतापनगर, जयपुर-302033, राजस्थान

क्षेत्रीय प्रतिनिधिः शेख मोहम्मद कल्याण, डोडा, जम्मू-कश्मीर
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः डॉ. सत्यभामा आडिल, शंकर नगर, छत्तीसगढ़, रायपुर।
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः डॉ. मूलचंद गौतम, शक्तिनगर, चंदौसी, मुरादाबाद-202412, उत्तर प्रदेश।
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः प्रो. मोहन सपरा, इ.जी.-1083, गोविन्दगढ़, एसडी कॉलेज रोड, जालंधर, पंजाब।
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः सुरेश सेन निशांत, गांव सलाह, डॉ. सुन्दर नगर-1, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-174401.
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः गौतम सिन्हा, सिक्किम
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः आलोक शर्मा 'प्रवीण', सिलीगुड़ी
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः डॉ.देवेन्द्र प्रसाद सिंह, सासाराम-821115, बिहार
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः डॉ. चेतना राजपूत, डी-ब्लू 44/3, आर्मामेंट कॉलोनी, गणेशखिंड, पुणे-411007
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी, 83-ए कॉलिसुर रोड, ओम रेसिडेंसि, बी.एल.-3, फ्लाट-3ए, कोलकाता-700002
क्षेत्रीय प्रतिनिधिः विक्रम सिंह, उत्तराखंड, मोः 090122-75039
सहायक संपादकः डॉ. रंजु नमीपुरिया, नई दिल्ली 7838011230

डिजाईनः कमल प्रसाद खाती

- पत्रिका से संबंधित सभी तरह के विवाद सिलीगुड़ी न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।
- रचनाओं में व्यक्त किये गये विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

प्रगतिशील धारा के सशक्त हस्ताक्षर : प्रोफेसर जगदीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी

प्रोफेसर जगीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। सुप्रसिद्ध साहित्यकार, ख्यातिलब्ध आलोचक, प्रखर वक्ता चिंतक तथा शीर्षस्थ मीडिया सिद्धांतकार, विमर्शकार के रूप में साहित्य और मीडिया जगत में विश्व स्तर पर उन्होंने अपनी अमिट पहचान कायम की है। आप बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कृतित्व के धनी हैं। आप का जन्म मथुरा उ.प्र. में 15 सितम्बर 1956 को हुआ। आप सन् 1984 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता नियुक्त हुए। सन् 1993 में रीडर तथा 2001 से 2016 तक प्रोफेसर-पद पर आसीन रहे। साहित्य-संस्कृति, समाज, मीडिया आदि अनेक विषयों पर आपकी अब तक 61 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, तथा इनमें से अधिकांश पुस्तकें साहित्य, समाज, मीडिया तथा राजनीतिक क्षेत्रों में बेहद प्रशंसित और चर्चित हैं।

आप की गहन जनसरोकारों से युक्त बेबाक आलोचना पद्धति हमारे लिए अनुकरणीय है। आप जैसी बेबाक आलोचना दुर्लभ है। आप का जनवादी लेखन जीवन में गहरे झांककर मानवता को नयी चेतना देने, सदियों से पीड़ित मानवता के मुक्ति-संघर्षों में हिस्सा बढ़ाने की शिक्षा तथा प्रेरणा दे रहा है। आप जीती-जागती पाठशाला तथा पुस्तकालय हैं। जनसरोकारों से जुड़े आप प्रथम पंक्ति के सक्रिय प्रतिबद्ध लेखक व अध्ययनशील बुद्धिजीवी हैं। सिर्फ़ शब्दजीवी और मसिजीवी न होकर आप काइयां और कायर समय के बीच प्रतिरोध की सच्ची जमीन तलाशने वाले जनपक्षधर चिंतक तो हैं हीं,और साथ ही अपने समय-संघर्ष को पूरी शिद्दत से जीने वाले एक सृजनकर्मी भी। एक योग्य शिक्षक होने के साथ ही छात्र प्रतिनिधि भी। अपने शोधार्थियों के बीच आपका मित्रवत् संबंध आपके व्यक्तित्व का एक ख़ास पहलू रहा है। बेशक आपकी सघन आंतरिकता एवं जीवंत सहयोग का ही वह अभिनव विस्तार है, जो आज देश के विभिन्न प्रांतों के कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में आपके पढ़ाये हुए विद्यार्थी ज्ञान के आलोक को फैला रहे। आप लेखन व जीवन में सच्चाई तथा ईमानदारी के हिमायती हैं। आप अपनी विचारधारा तथा लेखकीय दायित्व के प्रति सदैव सजग और निष्ठावान हैं। आप एक कर्मठ योद्धा, जुझारू तथा संघर्षशील व्यक्तित्व के प्रतीक हैं। नयी पीढ़ी को आप से सीख लेने की, मार्गदर्शन की अपार तथा अकूत संभावनाएं हैं। आप ने मार्क्सवादी, जनवादी जीवन दर्शन को केवल सिद्धांत में नहीं, अपितु व्यवहार में तथा आचरण में उतारा है। आप ने हिन्दी आलोचना में सामाजिक संदर्भों की मजबूत आधारभूमि विकसित की है। आप के आलोचना तथा सृजन कर्म पर मार्क्सवादी दर्शन की स्पष्ट छाप है। लेकिन आपने यांत्रिक दृष्टिकोण के स्थान पर व्यावहारिक दृष्टिकोण का प्रयोग किया है। आप का दो टूक लहजा आलोचना को जहां एक ओर धारदार बनाता है, वहीं भ्रमों का निवारण करता है। आप ने हिन्दी आलोचना को जीवन के साथ गहराई से जोड़ा है। आपने आलोचना तथा सृजन को बौद्धिक विकास के लिए नहीं, वरन लोकतांत्रिक, सामाजिक, जनपक्षधर जनचेतना का माध्यम बनाया है।

आप समाज, राजनीति, साहित्य-संस्कृति, मीडिया आदि पर होने वाली विभिन्न बहसों तथा समसामयिक विषयों,मुद्दों पर भरपूर हस्तक्षेप करते हैं। आप विचारों के बीज बोने वाले सर्जक और महान विचारक, साहित्यकार हैं। आप की रचनाओं में प्रतिरोध के सशक्त स्वर मौजूद हैं। आप साहित्य चेतना को समाज-जीवन से जोड़ना चाहते हैं। साहित्य और समाज के सरोकार आप के साहित्य तथा व्यक्तित्व की धमनियों में प्रवाहित है। आप श्रेष्ठ सामाजिक जीवन की समरसता तथा श्रेष्ठ मानवीय, जनवादी मूल्यों की स्थापना और रक्षा के लिए सतत संघर्षरत् हैं। ऊपर से कोमल, विनम्र तथा मधुर महसूस होने वाला आपका व्यक्तित्व भीतर से अत्यंत दृढ़ तथा मज़बूत है। आप समाज, देश, विश्व, साहित्य-संस्कृति तथा आज का मीडिया व अन्य जनसरोकारों के तीखे सवालों से टकराते हैं, अपनी रचनाओं तथा वक्तव्यों में उठाते हैं, उन पर अपना विचार रखते हैं साथ ही विकल्प और समाधान प्रस्तुत करते हैं। आप की आलोचना सर्जना में सार्थक हस्तक्षेप करती है। आपकी वैज्ञानिक दृष्टि और संघर्षशीलता अनायास ही सबको आकृष्ट व प्रेरित करती है।

आप हमारे समय-संघर्ष, साहित्य तथा मीडिया जगत के चिंतनशील और विरल आलोचक हैं। आपका हमेशा अपने समय, परिवेश से संवाद चलता रहता है। आप एक सुचिंतक, निर्भीक, जुझारू सर्जक तथा ऐक्टीविस्ट हैं। आपने साहित्यिक-सांस्कृतिक तथा मीडिया जगत में जो स्थान बनाया है, प्रतिष्ठा प्राप्त की है, वह असाधारण है। आपके चिंतन,सृजन, आलोचना, विवेचना का कैनवास अत्यंत विस्तृत है। आप किसी भी रचना, विषयवस्तु की तह में जाकर, पूरी तरह डूबकर उसका तात्त्विक, वस्तुनिष्ठ मार्क्सवादी, वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन करते हैं। आपकी आलोचना में सृजनात्मकता की यथेष्ट ऊर्जा विद्यमान है। आलोचना की भाषा को आपने पाठकों के निकट लाने का प्रयास किया है। हिन्दी समालोचना की वह भाषा जो अध्यापकीय होने के साथ जड़ नितांत पुस्कीय थी, अभी भी है, आप उसके विपरीत अथक संघर्ष करके उस भाषा में एक नयी उष्मा, नयी अर्थवत्ता, नयी दृष्टि भरने का ऐतिहासिक काम किया है। आपकी आलोचना दृष्टि भेदक,मारक तथा पैनी है।

आप किसी विषय, रचना की आलोचना-समीक्षा उसके सामाजिक, राजनीतिक, लोकजीवन तथा लोकतत्त्वों तथा जनता के वृहत्तर तथा गहन परिप्रेक्ष्य में करते हैं। आपकी आलोचना का स्वरूप मार्क्सवादी, समाजवादी तथा जनवादी दृष्टि के मेल से पक कर तैयार हुआ है। आपकी आलोचना पद्धति संवादधर्मी है, इसलिए वह पाठक तथा रचनाकार से निरंतर एक बहस करती चलती है। अतः कह सकते हैं, आपकी आलोचना हर हाल में रचना की विषय-वस्तु की सहयात्री है। आपमें एक सफल समीक्षक तथा आलोचना का गहरा रचना विवेक है। राष्ट्रीय स्तर की चर्चित पत्र-पत्रिकाओं में आप के चिंतनपरक वैचारिक लेख नियमित रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। आप अपने को निरंतर समकालीन ही नहीं, बल्कि अपटुडेट रखने वाले सृजनधर्मी क़लमकार हैं। आप पढ़ाते ही नहीं सिखाते भी हैं। आपका अध्यापन संवाद बनकर उभरा है। आपकी चेष्टा छात्रों में विवेचनात्मक चेतना विकसित करने की है। आपकी रचनाशैली मोदक, विचारशील तथा आत्मविश्वासपूर्ण है। आपकी वैचारिक दृढ़ता अपने आप में बौद्धिक जगत के लिए एक दृष्टांत है। बेशक एक प्राणवंत व जीवंत सर्जक के तौर पर हिन्दी साहित्य में आपने अपनी अभिनव उपस्थिति दर्ज करायी है। एक बड़े आलोचक, साहित्यकार में जिस प्रतिभा तथा जिस विवेक की अनिवार्यता होनी चाहिए वे सब आप में विद्यमान हैं। आप के विचार, वक्तव्य तथा रचनाधर्मिता पाठक तथा श्रोता की जड़ता गतानुगतिकता को झकझोरती है और उसे चैतन्य बनाती है। आप को लोकप्रियताओं, सम्मानों तथा प्रशस्तियों की बिल्कुल ही चिंता नहीं रहती है। आपकी एक बड़ी ख़ासियत है और वह यह कि आपके बारे में दूसरे लोग क्या सोचते अथवा कहते हैं,इससे आप प्रभावित नहीं होते। आचार-आचरण और विचार का एक उद्धृत समन्वय-संतुलन एवं समानता आप में सहज ही देखा जा सकता है। कई अनछुए एवं अचर्चित विषयों को आपने बौद्धिक विमर्श के केंद्र में लाकर हिन्दी साहित्य-जगत को ऊर्जस्वित तथा आंदोलित किया है। स्त्री वमर्श को एक नया आयाम व गति प्रदान कर सदियों के विभ्रम दूर करने को लेकर आप जो सृजन कर रहे हैं, हिन्दी साहित्य में यह विरल है। आपकी एक बड़ी ख़ासियत है और वह यह कि आप अपने चिंतन, विवेचन को अधिकाधिक समसामयिक एवं प्रासंगिक बनाने का प्रयास निरंतर करते रहते हैं। आप चिंतक,मीडिया अध्येता,विद्वान होने के साथ हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य हस्ताक्षर, साहित्यकार, बहुआयामी व्यक्तित्व,आलोचक हैं, और साथ ही अत्यंत विनम्र भी। आपने जो साहित्य साधना का मंगलद्वीप जलाया है वह सतत् प्रज्वलित रहे,आप स्वस्थ रहें, सक्रिय रहें,दीर्घायु हों, अनिर्णय के इस कठिन समय तथा संघर्ष में समझौताहीन धारा को आगे बढ़ाते रहें, यही हमारी शुभकामनाएं हैं और अपेक्षा भी। 'आपका तिस्ता-हिमालय' की ओर से आपको सम्मानित कर हम अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं !

राजेन्द्र प्रसाद सिंह

20/02/2020

परिचय

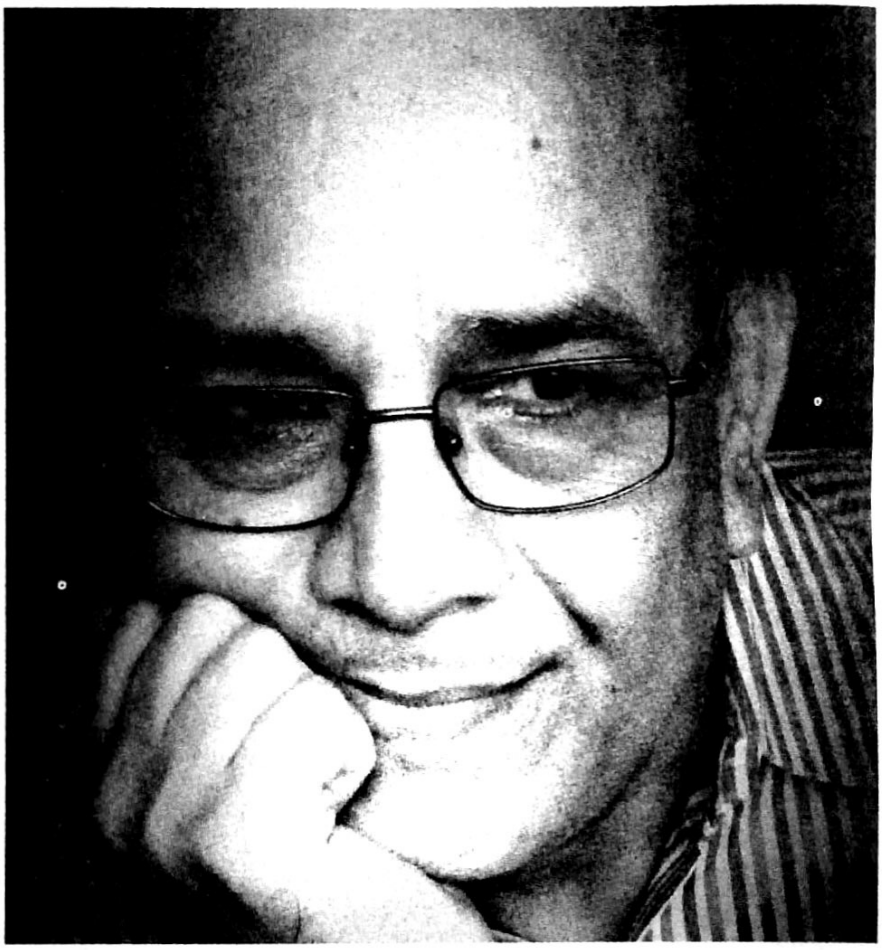

नाम- **जगदीश्वर प्रसाद चतुर्वेदी**
जन्म- 15-09-1956
जन्मस्थान- मथुरा
शिक्षा- प्रथमा से लेकर सिद्धांत ज्यौतिषाचार्य डिग्री हेतु संस्कृत माध्यम से आरंभिक शिक्षा, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से संबंद्ध माथुर चतुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय, मथुरा से। सन् 1979 से 1986 तक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से हिंदी में एम.ए. (1981), एमफिल (1983), पीएचडी (1987)।
अध्यापन- सन् 1989 में कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता पद पर नियुक्ति। 1993 में रीडर। सन् 2001-2016 तक प्रोफ़ेसर। तीन बार हिन्दी विभागाध्यक्ष।

प्रकाशित पुस्तकें-

1. दूरदर्शन और सामाजिक विकास, 1991, डब्ल्यू न्यूमैन एंड कंपनी, कोलकाता.
2. मार्क्सवाद और आधुनिक हिन्दी कविता,1994, राधा पब्लिकेशंस, दिल्ली.
3. आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकतावाद, 1994, सहलेखन, संस्कृति प्रकाशन, कोलकाता.
4. जनमाध्यम और मासकल्चर, 1996, सारांश प्रकाशन, दिल्ली.
5. हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका, 1997, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्रा.लि., दिल्ली
6. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, 2000, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्रा.लि., दिल्ली.
7. सूचना समाज, 2000, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
8. जनमाध्यम प्रौद्योगिकी और विचारधारा, 2000, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
9. माध्यम साम्राज्यवाद, 2002, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
10. जनमाध्यम सैद्धांतिकी, 2002, सहलेखन, अनामिका पब्लिशर्स एड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
11. टेलीविजन, संस्कृति और राजनीति, 2004, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
12. उत्तर आधुनिकतावाद, 2004, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली.
13. साम्प्रदायिकता, आतंकवाद और जनमाध्यम, 2005, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
14. युद्ध, ग्लोबल संस्कृति और मीडिया, 2005, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
15. हाइपर टेक्स्ट, वर्चुअल रियलिटी और इंटरनेट, 2006, अनामिका पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि.
16. कामुकता, पोर्नोग्राफी और स्त्रीवाद, 2007, (सहलेखन) आनंद प्रकाशन, कोलकाता
17. भूमंडलीकरण और ग्लोबल मीडिया, 2007, (सहलेखन), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
18. नंदीग्राम मीडिया और भूमंडलीकरण, 2007, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा.लि., दिल्ली
19. प्राच्यवाद वर्चुअल रियलिटी और मीडिया, (2008), (सहलेखन) अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली
20. वैकल्पिक मीडिया लोकतंत्र और नॉम चोम्स्की, (2008), (सहलेखन) अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
21. तिब्बत दमन और मीडिया, (2009) , अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली
22. ओबामा और मीडिया, (2009), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
23. 2009 लोकसभा चुनाव और मीडिया , (2009), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली
24. डिजिटल युग में मासकल्चर और विज्ञापन, (2010), (सहलेखन) अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली
25. उंब्रेतों इदोः चिह्नशास्त्र, साहित्य और मीडिया, (2012) अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.
26. अन्ना हजारे:मीडिया भ्रष्टाचार और डिजिटल कैपीटलिज्म, (2012)

स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

27. हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, मीडिया समग्र, खंड 1, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

28. मीडिया, विचारधारा और संस्कृति, मीडिया समग्र, खंड 2, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

29. ज्ञान क्रांति और साइबर संस्कृति, मीडिया समग्र, खंड 3,(2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

30. जनमाध्यम और मासकल्चर, मीडिया समग्र, खंड 4, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

31. हिन्दू साम्प्रदायिकता और मीडिया, मीडिया समग्र, खंड-5, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

32. युद्ध, आतंकवाद और मीडिया, मीडिया समग्र, खंड 6,(2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

33. मीडिया आलोचक और मीडिया मॉडल, मीडिया समग्र, खंड-7, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

34. मीडिया चैनल और सामाजिक यथार्थ, मीडिया समग्र, खंड-8, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

35. माध्यम साम्राज्यवाद, मीडिया समग्र, खंड-9, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

36. ब्लॉग संस्कृतिः तमाशबीनों की दुनिया, मीडिया समग्र, खंड-10, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

37. साइबर संस्कृति के भारतीय बिम्ब, मीडिया समग्र, खंड-11, (2012) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

38. इंटरनेट, आलोचना और जनतंत्र, (2013) स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

39. साहित्य का इतिहास दर्शन (2013) अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

40. लोकतंत्र और सोशलमीडियाः अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी और मनमोहन सिंह, (2014), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

41. डिजिटल कैपीटलिज्म फ़ेसबुक संस्कृति और मानवाधिकार, (2014), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

42. नरेन्द्र मोदी और फासीवादी प्रचारकला, (2014), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

43. पोर्नोग्राफी के प्रतिवाद में (2015), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि., दिल्ली

44. नामवर सिंह और समीक्षा के सीमांत, 2016, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

45. रामविलास शर्माः परवर्ती पूंजीवाद और साहित्येतिहास की समस्याएं, 2017, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

46.मार्क्सवादी साहित्यालोचना की समस्याएं, 2018, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

47. साइबर परिप्रेक्ष्य में हिंदी संस्कृति, 2018, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली

48. लेखक,संस्कृति और विश्वदृष्टि, 2018, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.

49. उत्तर आधुनिकतावाद और विचारधारा, 2018, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.

50. आधुनिकतावाद, मीडिया और साहित्य, 2018, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.

51. नवजागरण,उदारवाद और राष्ट्रवाद, 2020, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि., दिल्ली.

52. शीतयुद्धीय राजनीति, साहित्य और मुक्तिबोध, (शीघ्र प्रकाश्य) एकेडमिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली

53. जनमाध्यम सैद्धान्तिकी,मॉडल और विचारधारा,सहलेखन, ,(शीघ्र प्रकाश्य) एकेडमिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली

54.लिंगभेद,पितृसत्ता और स्त्रीवाद, सहलेखन, ,(शीघ्र प्रकाश्य) एकेडमिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली

55. मीडिया सिद्धान्तकार और मीडिया संस्कृति,सहलेखन, ,(शीघ्र प्रकाश्य) एकेडमिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली

56. सोशल मीडिया और साहित्य, (शीघ्र प्रकाश्य) अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि. दिल्ली

सह-संपादन-

57. बाबरी मसजिद -रामजन्मभूमि विवाद, 1991, (सं.) डब्ल्यू न्यूमैन एंड कंपनी, कोलकाता

58. प्रेमचंद और मार्क्सवादी आलोचना, सहसंपादन, 1994, संस्कृति प्रकाशन, कोलकाता

59. स्त्री अस्मिता, साहित्य और विचारधारा, सहसंपादन, 2004, आनंद प्रकाशन , कोलकाता

60. स्त्री काव्यधारा, सहसंपादन, 2006, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि. दिल्ली.

61.स्वाधीनता-संग्राम, हिन्दी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र, सहसंपादन, 2006, अनामिका प्रा.लि. ●

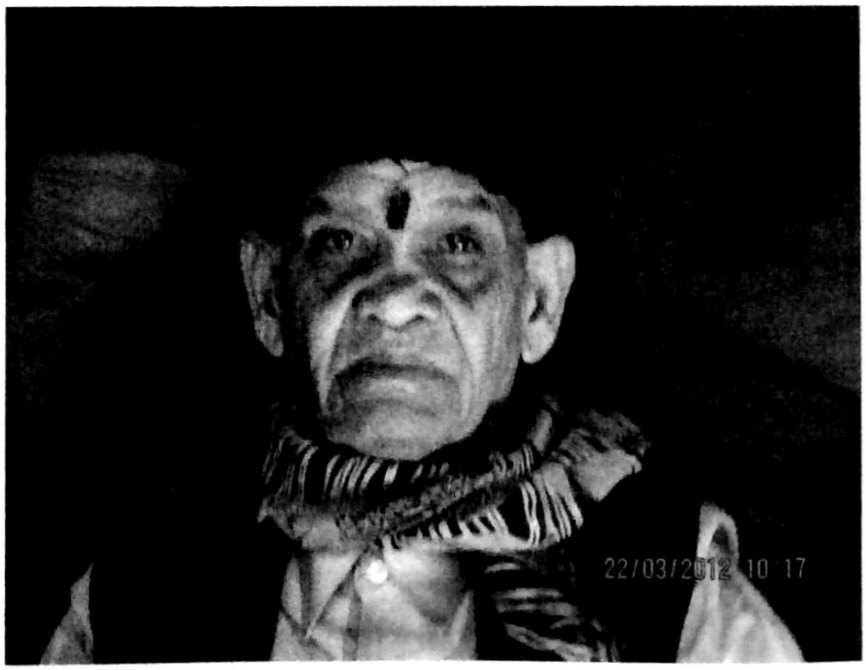

जगदीश्वर प्र. चतुर्वेदी के पिता श्री लड्डूगोपाल शास्त्री